पाठ 16

सामान्य भविष्यत् काल (लृट्); धातुओं के सेट् और अनिट् वर्ग, कर्तृवाच्य से कृत् प्रत्यय; त्वा, य, 'चतुरः वानरः' कथा।

16.1 क्रि. सामान्य भविष्यत् काल (लृट् लकार): अब तक हमने चार गणों की धातुओं के लट्, लङ्, लोट् और विधिलिङ् लकारों में रूप पढ़े हैं। अब हम सामान्य भविष्यत् काल के रूप सीखेंगे। संस्कृत में दो प्रकार के भविष्यत् काल हैं। इनमें से एक दूरवर्ती भविष्यत् है और दूसरा सामान्य भविष्यत्। दूरवर्ती भविष्यत् का प्रयोग सुदूर भविष्य में होने वाले ऐसे कार्य के लिए होता था। तथा सामान्य भविष्यत् काल का प्रयोग भविष्य में होने वाली किसी भी घटना के लिए हो सकता है। सामान्य भविष्यत् और दूरवर्ती भविष्यत् के प्रयोग का यह भेद बाद में प्रायः समाप्त हो गया।
टिप्पणी:—संस्कृत क्रियाओं का दस गणों में विभाजन केवल लट्, लङ्, लोट् और विधिलिङ् के परस्मैपद और आत्मनेपद पर ही लागू होता है। इन चारों को सम्मिलित रूप में **'सार्वधातुक लकार'** कहा जाता है। अन्य सभी लकारों में सभी गणों की धातुओं को एक-समान समझा जाता है।

16.2 क्रि. धातुओं के सेट् और अनिट् वर्ग:—यहाँ संस्कृत की धातुओं के एक अन्य महत्वपूर्ण भेद पर भी ध्यान देना आवश्यक है। सार्वधातुक लकार बनाने के लिए कुछ धातुओं के साथ प्रत्यय (इनमें अन्त्य प्रत्यय शामिल नहीं है) से पूर्व **-इ** जोड़ा जाता है इन्हें सेट् धातु कहते हैं जबकि कुछ धातुओं के साथ **-इ** नहीं जोड़ा जाता अर्थात् इनमें प्रत्यय सीधे धातु के साथ जुड़ते हैं। इनमें से पहले वर्ग को **सेट् वर्ग** दूसरे वर्ग को **अनिट् वर्ग** कहते हैं। कुछ धातुएँ ऐसी भी हैं जो सेट् और अनिट् दोनों वर्गों की हैं। इन्हें **वेट्** (विकल्प से इट्) कहते हैं क्योंकि इनमें विकल्प से **इ** जुड़ता है।

16.3 क्रि. लृट् लकार (सामान्य भविष्यतकाल) के परस्मैपद और आत्मनेपद के अन्त्य प्रत्यय नीचे दिए गए हैं। वर्तमान काल के अन्त्य प्रत्ययों से इनमें केवल इतना ही अन्तर है कि इनमें अन्त्य प्रत्ययों से पूर्व **-स्य** जुड़ जाता है:—

	परस्मैपद			**आत्मनेपद**		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पु.	**-स्यति**	**-स्यतः**	**-स्यन्ति**	**-स्यते**	**-स्येते**	**-स्यन्ते**
मध्यम पु.	**-स्यसि**	**-स्यथः**	**-स्यथ**	**-स्यसे**	**-स्येथे**	**-स्यध्वे**
उत्तम पु.	**-स्यामि**	**-स्यावः**	**-स्यामः**	**-स्ये**	**-स्यावहे**	**-स्यामहे**

16.4 क्रि. लृट् लकार बनाने के लिए नीचे लिखे नियम लागू होते हैं:

क) यदि **स्** से पहले **अ** या **आ** से भिन्न कोई स्वर हो तो **स् ष्** में बदल जाता है (देखिए पाठ 9.2)।

ख) लृट् लकार के अन्त्य प्रत्ययों से पहले धातु के अंतिम स्वर और मध्यवर्ती (दो व्यंजनों के बीच आने वाले) ह्रस्व स्वर को गुण हो जाता है, जैसेः- **लिख्** को **लेख्,** और **जि** को **जे** हो जाता है।

ग) दसवें गण की धातुओं के **अङ्** का रूप वैसा ही रहता है, केवल अंग के अंतिम **अ** का लोप हो जाता है। (**चुर्- चोरय्**, **कथ्- कथय्**, आदि)।

घ) सेट् धातुओं में धातु के साथ **इ** जुड़ता है। चुरादि गण की सभी धातुए; सेट् हैं इसलिए इनके अंतिम **अ** को **इ** हो जाता है। **लिख्** धातु सेट् है, इसलिए गुण होकर और **इ** जोड़ने के बाद यह **लेखि** हो जाती है।

लिख् धातु के लृट् लकार के रूप निम्नलिखित हैंः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**लेखिष्यति**	**लेखिष्यतः**	**लेखिष्यन्ति**
मध्यम पुरुष	**लेखिष्यसि**	**लेखिष्यथः**	**लेखिष्यथ**
उत्तम पुरुष	**लेखिष्यामि**	**लेखिष्यावः**	**लेखिष्यामः**

पा धातु अनिट् है। इसके साथ भविष्यत् काल के अन्त्य प्रत्यय सीधे जुड़ते हैं। इसके सामान्य भविष्यत् काल के रूप आगे दिए गए हैंः-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**पास्यति**	**पास्यतः**	**पास्यन्ति**
मध्यम पुरुष	**पास्यसि**	**पास्यथः**	**पास्यथ**
उत्तम पुरुष	**पास्यामि**	**पास्यावः**	**पास्यामः**

16.5 क्रि. आइए अब हम लृट् लकार के अधिक प्रयोग में आने वाली कुछ धातुओं के प्रथम पुरुष, एकवचन के लृट् लकार के रूप देखें:—

क) निम्नलिखित धातुएँ सेट् हैं (इनमें अन्त्य प्रत्यय जुड़ने से पूर्व **इ** जुड़ता है)ः

कथ् (कथय्)	– कथयिष्यति	**कृ (कर्)**	– करिष्यति
क्रीड्	– क्रीडिष्यति	**खाद्**	– खादिष्यति
गम्	– गमिष्यति	**चल्**	– चलिष्यति
चुर् (चोरय्)	– चोरयिष्यति	**पठ्**	– पठिष्यति
पत्	– पतिष्यति	**भू (भव्)**	– भविष्यति
मन्त्र (मन्त्रय्)	– मन्त्रयिष्यते	**मुद्**	– मोदिष्यते
रुच्	– रोचिष्यते	**लिख्**	– लेखिष्यति
वृध् (वर्ध्)	– वर्धिष्यते	**स्मृ (स्मर्)**	– स्मरिष्यति

ख) निम्नलिखित धातुएँ अनिट् हैं। इनमें अन्त्य प्रत्यय जुड़ने से पूर्व **इ** नहीं जुड़ताः

गै	– गास्यति	**जि**	– जेष्यति
दा	– दास्यति	**दृश्**	– द्रक्ष्यति
नी	– नेष्यति	**पच्**	– पक्ष्यति

पा	– पास्यति	**प्रच्छ**	– प्रक्ष्यति
मन्	– मंस्यते	**लभ्**	– लप्स्यते
सृज्	– स्रक्ष्यति	**स्था**	– स्थास्यति

16.6 अ. नीचे दिए वाक्यों को पढ़िए और उनका हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

1. ते अद्य सायम्[1] अस्माकं गृहम् आगमिष्यन्ति। 2. वयं तै: सह श्व:[2] नगरस्य दर्शनीयानि[3] स्थानानि द्रक्ष्याम:। 3. त्वं श्व: किं करिष्यसि? 4. अहं श्व: स्वकक्षाया: अन्यै: बालकै: सह क्रीडिष्यामि। 5. यूयम् अमेरिकादेशात् तस्यै किम् आनेष्यथ? 6. वयं तस्यै बहूनि वस्तूनि आनेष्याम:। 7. तासां बालिकानां पिता ता: रविवारे कुत्र नेष्यति? 8. स: ता: रविवारे जन्तुशालां[4] नेष्यति। 9. यूयमद्य किं खादिष्यथ? 10. वयमद्य केवलं दुग्धं पास्याम:। 11. वयं सर्वे अद्य संस्कृतस्य नवीनं पाठं पठिष्याम: 12. त्रयाणां मासानां पश्चात्[5] वृक्षेभ्य: पत्राणि पतिष्यन्ति। 13. रात्रि: गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्[6]। 14. शास्त्राणां पठनेन अस्माकं ज्ञानं वर्धिष्यते। 15. वयं परिश्रमेण धनं लप्स्यामहे।

(**शब्दार्थ**: 1. शाम को, 2. (आनेवाला) कल, 3. देखने लायक, 4. चिड़ियाघर, 5. के बाद, 6. सुहाना सबेरा, कभी-कभी प्रात:कालीन नमस्कार के लिए भी इसका प्रयोग होता है।)

16.7 क्रि. कृत् प्रत्यय: अब तक हमने धातुओं से बनने वाले ऐसे ही शब्द देखे हैं जो वाक्य में क्रिया का काम करते हैं। हमने देखा है कि किस प्रकार **पठ्** धातु से **पठति, पठतु, अपठन् पठेयु: पठयते** आदि रूप बनते हैं जो विभिन्न लकारों में विभिन्न पुरुषों और वचनों के साथ अन्वित होते हैं। ये क्रियारूप धातु के साथ **ति, त:, अन्ति; ते, ईते, अन्ते** आदि अन्त्य प्रत्ययों से मिलकर बनते हैं। इन प्रत्ययों को संस्कृत व्याकरण में **तिङ्** प्रत्यय कहते हैं और इनके योग से बनने वाले शब्दों को **तिङन्त** कहते हैं। इनके अतिरिक्त संस्कृत में धातुओं से बननेवाले अन्य बहुत-से शब्द हैं जो वाक्य में प्रयुक्त होते हैं। ये शब्द जिन प्रत्ययों के योग से बनते हैं उन्हें **कृत्** प्रत्यय कहा जाता है और उनके योग से बनने वाले शब्दों को कृदन्त शब्द कहते हैं। इस पाठ में हम एक महत्त्वपूर्ण **कृत् प्रत्यय त्वा/य** का परिचय प्राप्त करेंगे।

कृत प्रत्यय त्वा:– यदि वाक्य में एक ही कर्ता, समापिका क्रिया द्वारा बताए जाने वाले कार्य से पूर्व, एक या एक से अधिक कार्य कर रहा हो तो पहले होनेवाले कार्य को बताने के लिये **त्वा** कृत् प्रत्यय का प्रयोग होता है, उदाहरणार्थ: **स: भोजनं कृत्वा भ्रमणाय अगच्छत्** – उसने भोजन किया और वह घूमने गया। इस वाक्य में भोजन करने का काम घूमने जाने से पहले हो रहा है अत: उसे बताने के लिए **कृ** धातु के साथ **त्वा** प्रत्यय का प्रयोग हुआ है।

सेट् वर्ग की धातुओं में **त्वा** से पहले **इ** जुड़ता है **सा प्रश्नान् पठित्वा तेषाम् उत्तराणि च लिखित्वा अध्यापकस्य समीपम् अगच्छत्** – वह प्रश्नों को पढ़ कर और उनके उत्तरों को लिखकर अध्यापक के पास गई। इस वाक्य में मुख्य क्रिया से

पहले दो कार्य हो रहे हैं, इसलिए उन्हें बताने के लिए पठित्वा और लिखित्वा का प्रयोग हुआ है। एक और उदाहरण देखिएः **चौरः बहूनि वस्तूनि चोरयित्वा गृहात् बहिः अगच्छत्** – चोर बहुत-सी चीजें चुराकर घर से बाहर चला गया। **पठित्वा, लिखित्वा, चोरयित्वा** शब्द सेट् धातुओं से बने हैं इसलिए इनको बनाते समय धातु के साथ **इ** जुड़ गया है। त्वा जुड़ने पर धातुओं के अन्तिम नासिक्य व्यंजन का लोप हो जाता है जैसेः **गम् + त्वा = गत्वा।** नीचे त्वा प्रत्यय से बनने वाली क्रियाओं के कुछ उदाहरण देखिएः

कथ् + त्वा = कथयित्वा (कहकर) **क्रीड् + त्वा** = क्रीडित्वा (खेलकर)
गण् + त्वा = गणयित्वा (गिनकर) **गम् + त्वा** = गत्वा (जाकर)
पठ् + त्वा = पठित्वा (पढ़कर) **श्रु + त्वा** = श्रुत्वा (सुनकर)
स्मृ + त्वा = स्मृत्वा (स्मरण करके)

16.8 क्रि. त्वा के स्थान पर य का प्रयोगः यदि धातु से पूर्व कोई उपसर्ग हो तो **त्वा** के स्थान पर **य** का प्रयोग होता है। जो धातुएँ ह्रस्व स्वरांत होती हैं **अ** के बाद **य** से पहले **त्** भी जुड़ता हैः

अनु	+	**भू**	+	**य**	=	अनुभूय (अनुभव करके)
आ	+	**दा**	+	**य**	=	आदाय (लेकर)
आ	+	**रुह्**	+	**य**	=	आरुह्य (चढ़कर)
प्र	+	**स्तु**	+	**य**	=	प्रस्तुत्य (प्रस्तुत करके)
वि	+	**जि**	+	**य**	=	विजित्य (जीतकर)

टिप्पणीः- **न्** और **म्** में अंत होने वाली धातुओं में **न्** और **म्** व्यंजनों का विकल्प से लोप हो जाता हैः जैसेः- **आ + गम् = आगम्य, आगत्य;** (आकर) **प्र + नम् = प्रणम्य, प्रणत्य** (प्रणाम करके)।

16.9 अ. नीचे दिए वाक्यों को पढ़िए और उनका हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

1. सः पूजां कृत्वा भोजनं करोति। 2. अहं किञ्चित् कालं भ्रमित्वा गृहम् आगमिष्यामि। 3. सैनिकाः अश्वान् आरुह्य युध्दं कुर्वन्ति। 3. मित्रैः सह क्रीडित्वा मोहनः अमोदत। 5. सः अत्र आगत्य माम् अमिलत्। 6. सैनिकाः शत्रून् विजित्य स्वदेशमागच्छन्। 7. तस्य कथनं श्रुत्वा सर्वे अहसन्।

16.10 प. नीचे दी गई कहानी को पढ़िए और उसका हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

चतुरः वानरः

एकस्याः नद्याः तटे एकः विशालः जम्बुवृक्षः[1] आसीत्। तस्मिन् वृक्षे बहवः वानराः वसन्ति स्म। वृक्षस्य फलानि अति मधुराणि आसन्। वानराः तानि फलानि प्रतिदिनम् अखादन्। नद्याम् एकः मकरः[2] स्वजायया[3] सह अवसत्। सः मकरः प्रतिदिनं नद्याः तटे जम्बुवृक्षस्य अधः[4] आगच्छत्। तत्र एकः वानरः तस्य मित्रम् अभवत्। सः वानरः मकराय

बहूनि जम्बुफलानि अयच्छत्। मकरः कानिचित् फलानि स्वयम् अखादत् कानिचित् च स्वजायायै अनयत्[5]। तानि मधुराणि फलानि तस्य जायायै अतीव अरोचन्त[6]।

एकदा[7] मकरस्य जाया तम् अकथयत्- तव मित्रं वानरः तु प्रतिदिनं बहूनि जम्बुफलानि खादति। अतः तस्य हृदयम् अति मधुरं भवेत्। अहं तव मित्रस्य हृदयं खादितुम्[8] इच्छामि। यदि त्वं तस्य हृदयं मह्यं न आनेष्यसि, तर्हि[9] अहं न जीविष्यामि।

(**शब्दार्थः**- 1. जामुन का पेड़, 2. मगरमच्छ, 3. जाया- पत्नी ; 4. नीचे; 5. ले जाता था; 6. अच्छे लगते थे; 7. एक बार; 8. **खादितुम् इच्छामि**—खाना चाहती हूँ, 9. तो)

स्वजायायाः सम्मुखे[1] मकरः विवशः[2] अभवत्। सः नदीतीरं गत्वा स्वमित्रं वानरम् अवदत्- भोः[3] मित्र, मम जाया त्वयि अतीव स्निह्यति। सा त्वाम् आवयोः गृहे भोजनाय आमंत्रयते[4]। त्वमद्य मया सह अवश्यं आवयोः गृहं चल।

वानरः अकथयत्- युवयोः गृहं तु नद्याः मध्ये[5] अस्ति। अहं तत्र कथं गमिष्यामि? मकरः अवदत्- अस्य उपायः सरलोऽस्ति। त्वं मम पृष्ठे[6] उपविश। अहं त्वां स्वगृहं नेष्यामि।

वानरः मकरस्य विश्वासम् अकरोत्। सः मकरस्य पृष्ठे उपाविशत्[7]। मकरश्च नद्याः मध्यभागं प्राचलत्[8]। मार्गे सः वानरम् अवदत्-भोः मित्र, अहमद्य अतीव दुःखितः अस्मि, यतः[9] अहं त्वां सत्यं न अवदम्। तव हृदयम् अति मधुरम् अस्ति इति मम जाया चिन्तयति। सा तव हृदयं खादितुम् इच्छति। अहं स्वजायायाः सम्मुखे विवशः अस्मि। अतः त्वां स्वगृहम् नयामि।

(**शब्दार्थः**—1. सामने; 2. लाचार; 3. हे; 4. निमंत्रण दे रही है; 5. बीच में; 6. पीठ पर; 7. बैठ गया उप+आ+विश् , 8. चल पड़ा, 9. क्योंकि)

वानरः सहसा[1] अवदत्-यदि एषः तव विचारः आसीत्, तर्हि त्वं कथं[2] पूर्वम्[3] एव मां न अकथयः? अहं तु स्वहृदयं सदा वृक्षस्य कोटरे[4] एव धरामि[5]। त्वं मां शीघ्रं तत्रैव नय। अहं स्वहृदयम् आदाय[6] पुनः त्वया सह तव जायायाः भोजनाय आगमिष्यामि।

मूर्खो मकरः वानरं पुनः जम्बुवृक्षस्य अधः आनयत्। वानरः शीघ्रमेव मकरस्य पृष्ठात् वृक्षस्य शाखायाम्[7] अकूर्दत्[8]। सः मकरमवदत्-त्वं शठः[9] असि किन्तु मूर्खोऽपि असि। किं कस्यापि हृदयं तस्य शरीरात् पृथक्[10] भवति? गच्छ स्वगृहम्। भविष्ये अत्र कदापि न आगच्छ।

(**शब्दार्थः**—एकदम; 2. क्यों, कैसे; 3. (चलने से) पहले; 4. खोह में; 5. रखता हूँ 6. लेकर; 7. शाखा पर; 8. **कूर्द्**— कूदना; 9. कपटी, धूर्त; 10. अलग)

अभ्यासों के उत्तर

16.6 उ. 1. वे आज शाम को हमारे घर आएँगे। 2. कल हम उनके साथ शहर के दर्शनीय स्थानों को देखेंगे। 3. तुम कल क्या करोगे? 4. मैं कल अपनी कक्षा के दूसरे लड़कों के साथ खेलूँगा। 5. आप लोग अमरीका से उसके लिए क्या लाएँगे? 6. हम उसके लिए बहुत-सी चीजें लाएँगे। 7. उन लड़कियों के पिता उन्हें रविवार को कहाँ ले जाएँगे? 8. वे उन्हें रविवार

को चिड़िया-घर ले जाएँगे। 9. आप लोग आज क्या खाएँगे? 10. हम आज केवल दूध पिएँगे। 11. हम सब आज संस्कृत का नया पाठ पढ़ेंगे। 12. तीन महीने के बाद पेड़ों से पत्तो गिरेंगे। 13. रात गुजरेगी और सुहानी सुबह होगी। 14. शास्त्रों को पढ़ने से हमारा ज्ञान बढ़ेगा। 15. हम मेहनत से धन प्राप्त करेंगे।

16.9 उ. 1. वह पूजा करके खाना खाता है। 2. मैं थोड़ी देर घूमकर घर आऊँगा। 3. सैनिक लोग घोड़ों पर चढ़कर युद्ध करते हैं। 4. मित्रों के साथ खेल कर मोहन प्रसन्न हुआ। 5. वह यहाँ आकर मुझसे मिला। 6. सैनिक लोग शत्रुओं को जीतकर अपने देश में आ गए। 7. उसकी बात सुनकर सब लोग हँस पढ़े।

16.10 प. चतुर वानर:—एक नदी के किनारे बहुत बड़ा जामुन का पेड़ था। उस पेड़ पर बहुत-से बंदर रहते थे। पेड़ के फल बहुत मीठे थे। बन्दर हर रोज उन फलों को खाते थे। नदी में एक मगरमच्छ अपनी पत्नी के साथ रहता था। वह मगरमच्छ रोज़ नदी के किनारे जामुन के पेड़ के नीचे आ जाता था। वहाँ एक बंदर उसका मित्र बन गया। वह बन्दर मगरमच्छ को जामुन के बहुत-से फल देता था। मगरमच्छ कुछ फल तो स्वयं खा लेता और कुछ अपनी पत्नी के लिए ले जाता था। वे मीठे फल उसकी पत्नी को बहुत अच्छे लगते थे।

एक बार मगरमच्छ की पत्नी ने उससे कहा-तुम्हारा मित्र बन्दर हर रोज बहुत-से जामुन के फल खाता है। इसलिए उसका दिल बहुत मीठा होगा। मैं तुम्हारे मित्र के हृदय को खाना चाहती हँ। यदि तुम उसका हृदय मेरे लिए नहीं लाओगे, तो मैं जिन्दा नहीं रहँगी।

अपनी पत्नी के सामने मगरमच्छ लाचार हो गया। उसने नदी के किनारे जाकर अपने मित्र बंदर से कहा, प्रिय मित्र, मेरी पत्नी तुम्हें बहुत अधिक प्यार करती है। वह तुम्हें हमारे घर पर भोजन के लिए आमंत्रित कर रही है। तुम आज अवश्य मेरे साथ हमारे घर चलो।

बन्दर ने कहा, तुम्हारा घर तो नदी के बीच में है। मैं वहाँ कैसे जाऊँगा। मगरमच्छ ने कहा इसका तरीका (बहुत) आसान है। तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं तुम्हें अपने घर ले जाऊँगा।

बन्दर ने मगरमच्छ पर विश्वास कर लिया। वह मगरमच्छ की पीठ पर बैठ गया। मगरमच्छ नदी के मध्य भाग की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसने बन्दर से कहा—प्रिय मित्र, मैं आज बहुत दु:खी हँ क्योंकि मैंने तुमसे सच नहीं कहा। मेरी पत्नी समझती है कि तुम्हारा हृदय बहुत मीठा है, वह तुम्हारा हृदय खाना चाहती है। मैं अपनी पत्नी के सामने लाचार हँ इसलिए तुम्हें अपने घर ले जा रहा हँ।

बन्दर ने एकदम कहा, अगर तुम्हारा यह विचार था तो तुमने मुझे पहले ही क्यों नहीं बताया? मैं अपना हृदय हमेशा पेड़ के खोल में रखता हँ। तुम मुझे जल्दी वहाँ ले चलो। मैं अपने हृदय को लेकर फिर तुम्हारे साथ तुम्हारी पत्नी के भोजन के लिए आ जाऊँगा।

मूर्ख मगरमच्छ बन्दर को दुबारा जामुन के पेड़ के नीचे ले आया। बन्दर एकदम मगरमच्छ की पीठ से पेड़ों की शाखाओं पर कूदा। उसने मगरमच्छ से कहा—तू धूर्त है परन्तु साथ ही मूर्ख भी है। क्या किसी का हृदय उसके शरीर से अलग होता है? तू अपने घर जा। भविष्य में कभी इधर न आना।